आधुनिक कला एवं प्रमुख कला आलोचक

पूनम रानी

Email: gaursrish@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

पूनम रानी

''आधुनिक कला एवं प्रमुख कला आलोचक'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp. 57-60

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

प्रस्तावना

आधुनिकला एवं आधुनिक कला के विकास क्रम के समझने के लिए आवश्यक है कि हम कला की उस पृष्ठभूमि का निरीक्षण करे जो जो आधुनिक कला के विकास में सहायक सिद्ध हुई है। ''आधुनिकता का आन्दोलन स्थापित मूल्यों परम्पराओं एवं मान्यताओं के विरोध रूप में आरम्भ हुआ था। प्रचलित परम्पराओं पर प्रश्न खड़े किये गये उन्का पुनर्आकलन किया गया। नयी दिशाओं को खोजने की तड़प का नाम ही आधुनिकता है।''1

आधुनिकता सदैव परम्परा का विरोध करती आई है तथा यह विरोध ही उसके अस्तित्व को आधार प्रदान करता है। आधुनिकता व्यक्ति के चिन्तन पद से अद्‌भूत वह मानसिकता है जो अपने स्वरूप में सतत् प्रगतिशील है। आधुनिकता वस्तुतः एक वैज्ञानिक दृष्टि है जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व एवं चिन्तन के विकास की सूचनाओं को प्रवाहित करती है।''2

कला आलोचना का इतिहास

भारतीय कला में विद्धानों को कला अलोचकों का दर्जा देना अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि एक कला आलोचक का जो योगदान कला में निहित है वहीं योगदान भारतीय विद्वान का रहा है। ''भारतीय वाड्मय के प्राचीनतम स्रोत संस्कृत साहित्य में ढूढ़े जाते है। अतः जब भी किसी विषय, वस्तु अथवा तत्व के ऐतिहासिक विवेचन का प्रश्न उपस्थित होता है तो सर्वप्रथम हम वेदों पुराणों एवं उपनिषदों साहित्य का ही अवलोकन करते है।'' रस और सौन्दर्य विरोधी नहीं है रसवादी चिन्तकों ने भी रस के अन्तर्गत किसी न किसी रूप में सौन्दर्यबोधक तत्व की समाविष्ट किया है।

अतः हम ये मान सकते है कि किसी भी तत्व की अनुभूति होने के बाद उससे संबंधित बिन्दुओं पर विचार जरूर करते है। अगर हमें अनुभूति हीं नहीं होगी तो विचार का प्रस्फुटन कहा से होगा। मानव मन की ज्ञानेन्द्रियों में सौन्दर्य का प्रस्फुटन हुआ होगा तभी सौन्दर्य का आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया होगा। ''सौन्दर्य शास्त्र समस्त कलाओं का तत्व विवेचन करता है जिसकी अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम शब्दार्थ के अतिरिक्त, स्वर रंग रेखा काष्ठ आदि उपकरण भी है।''

सौन्दर्य की अनुभूति में सुन्दर वस्तु व कलाकार का समीक्षक के बीच भाव्य–भावक का संबंध होता है जिसमें आलोचनात्मक अनुभव भावनार्थ रूप से रहता है। कला में काव्य, संगीत, वास्तु, मूर्ति आदि कलाओं के रीति पक्ष का भी अध्ययन हो सकता है।

''सौन्दर्य शास्त्र की भारतीय परम्परा में प्रागैतिहासिक गुहा चित्र, भित्ति चित्र प्राचीन साहित्य, हड़प्पा संस्कृति वैदिक काल, मौर्य, शुंग, सातवाहन, कुषाण गुप्त काल मध्यकाल एवं आधुनिक काल तक कला व सौन्दर्य की समृद्ध परम्परा रही है।

कुछ प्रमुख कला आलोचक जिनका कला आलोचना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आलोचना का अर्थ

आलोचना शब्द 'लघु धातु से, जिसका अर्थ है देखना। इसी 'लघु' धातु से लोचन शब्द बनता है। इस प्रकार आलोचना का शाब्दिक अर्थ होता है 'किसी भी वस्तु का, जो प्रत्यक्ष रूप से वर्तमान है या प्रस्तुतानुभव में आती है, सब प्रकार से भली भांति देखना अथवा निरीक्षण करना।' कहने का अभिप्राय

यह है कि किसी वस्तु के सारे अंगों–प्रत्यंगों, रूप रंगों आदि का यथेष्ट रूप से अवलोकन करना ही वस्तुतः आलोचना का मूल मन्तव्य है।

आलोचना का तात्पर्य है किसी कृति या कलाकृति का सम्पूर्ण विवेचन करना आलोचना कहलाता है। आलोचना का माध्यम सम्पूर्ण रूप से परीक्षा है।

आलोचना की परिभाषा

प्रो0 रामस्वरूप चतुर्वेदीः ''आलोचना आलोचक की कृति की व्याख्या न होकर उसी का पुनर्सृजन मात्र है।''

डा0 जगदीश गुप्तः ''आलोचना रचना के आश्रित है, रचना आलोचना के आश्रित नहीं है कलाकार का स्वातंत्रय आलोचक के सवातंत्रय से बड़ा है।''

डा0 नगेन्द्रः ''आलोचना काव्य का आख्यान है और यह आख्यान वस्तु विश्लेषण मात्र नहीं है, यहाँ भी आख्यान शब्द पुनर्सृजन का ही वाचक है। अन्यथा जीवन का आख्यान है, यह वाक्य अपना अर्थ ही खो बैठता है आलोचना के संदर्भ में भी आख्यान वस्तु खो बैठता है आलोचना के संदर्भ में भी आख्यान वस्तु विश्लेषण मात्र नहीं है यहां भी पुनर्सृजन की प्रक्रिया चलती है।''

केशव मलिक

केशव मलिक (5 नवबर 1924–11 जून 2014) एक प्रसिद्ध भारतीय कवि, कला एवं साहित्य आलोचक कला विद्वान और संग्रहअध्यक्ष थे। वह हिन्दुस्तान टाइम्स तथा द टाइम्स ऑफ इंडिया के लिये कला आलोचक रहे। उन्होंने कविता की 18 अंक प्रकाशित किये और हिन्दी कविताओं के अंग्रेजी में अनुवादित 6 साहित्य संग्रह को संशोधन किया। उन्हें साहित्य में अपने योगदान के लिये चौथे सबसे विशिष्ट सामाजिक सम्मान पद्मश्री सं विभूषित किया गया। 2004 में ललित कला अकादमी, भारतीय राष्ट्रीय कला अकादमी ने उनके जीवन के योगदान के लिये ललित कला अकादमी का सभासद बनाया गया जो कि इसका सबसे बड़ा पुरस्कार है।8

रामचन्द्र शुक्ल

रामचन्द्र शुक्त प्रसिद्ध कला आलोचक के रूप में जाने जाते हैं। उनका जन्म 1925 में जिला बस्ती के हरैया तहसील में एक छोटे से ग्राम शुक्लपुरा के एक ब्राहम्ण परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनकी रूचि कला में थी। उनकी इच्छा हुई कि वे स्कुल ऑफ आर्ट् में दाखिला ले परन्तु जैसी उस समय परिस्थिति थी, पिताजी ने उन्हें अच्छी तरह ज्ञान करा दिया कि वहां शिक्षा प्राप्त कर उपके लिए जीवन व्यापक कर पाना कठिन हो जायेगा। उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी तो की परन्तु सब उन्होंने आधे मन से किया वास्तव में बचपन से ही उनकी रूची चित्रकला की ओर जागृत हो चुकी थी। यद्यपि इलाहाबाद में उस जमाने में आस–पास नाम मात्र का भी न तो काई चित्रकार था, न कलात्मक वातारण। लखनऊ में जब इनका इंटर का अंतिम वर्ष था तो सौभाग्यवश उस समय विश्वविद्यालय में भी कला की कक्षायें बंगाल के प्रसिद्ध कलाकार स्व0 क्षितीन्द्र नाथ मंजूमदार की देख–रेख में आरम्भ की और उसमें कुश्ज्ञलता प्राप्त की। 1947 में ये इलाहाबाद वापिस आये और यहां आकर इन्होंने अध्यापन विधि की ट्रेनिंग ली। एल0टी0 किया और विश्ज्ञेषकर चित्रकला शिक्ष्ज्ञण विधि में विशेष योग्यता प्राप्त की। 1948 में ये

चित्रकला के अध्यापक होकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी गये। ये अमृताशेरगिल व यामिनी राय से प्रभावित रहे हैं।9

प्रयागराज शुक्ल

प्रयागराज शुक्ल का जन्म कोलकाता में 1940 में हुआ। वह एक कला आलोचक और काल्पनिक कहानी लेखक हैं। उन्होंने नौ कविता पुस्तके, पांच लघु कहानियों के संग्रह, तीन उपन्यास, एक पुस्तक कला की समालोचना पर देखना और एक पुस्तक सत्यजीत रे पर एक फिल्मकार की ऊंचाई। उन्होंने ड्राईग 93, ड्राईग 94 रंग तंदूलकर (मराठी लेखक विजय तंदूलकर पर) कविता नादेय (नदियों पर एक कविता की पुस्तक) और हिन्दी मैगजीन कल्पना के विशेष मुददे काशी को संशोधित किया। उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखा।

उन्होंने बांगला कवि जीवन्दा दास और शंख घोष की कृतियों को अनुवादित किया साथ ही रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीताजंलि को हिन्दी में अनुवादित किया। कल्पना से अपने जीवन की शुरूआत की। उन्होंने दिमान और नवभारत टाईम्स के संशोधन कार्यालय में भी कार्य किया। इस समय वह राष्ट्रीय ड्रामा स्कूल रंग प्रसंग के हिन्दी जनरल के संशोधक है। 1984 में उन्होंने लोआ लेखन कार्यक्रम में हिन्दी का प्रतिनिधित्व किया, उन्होंने फ्रांस, ब्रिटेन, रसिया, चाईना का दौरा किया। उन्हें साहित्रू अकादमी अनुवाद पुरस्कार दिल्ली, अकादमी करूति पुरस्कार और दविज देव सम्मान मिला।

गीता कपूर

गीता कपूर का जन्म 1943 में हुआ। वह एक प्रसिद्ध भारतीय आलोचक, कला इतिहासकार और नई दिल्ली की संग्रहअध्यक्ष है। वह भारत में कला आलोचना लेखन की जन्मदाताओं में से एक है और इंडियन एक्सप्रैस के अनुसार उन्होंने समकालीन कला के सिद्धान्तों के क्षेत्र में तीन दशक तक अधिपत्य किया है। उनके पति विवान सुन्द्रम इंस्टोलेशन कलाकार है। 2011 में हांगकांग में एशिया लेखागार आयोजन में उनके लेखागारों को अधिकृत किया

संदर्भ ग्रंथ

1. अवधेश मिश्र, ''आधुनिक कला आन्दोलन'', दीर्घा, 2000: **81**
2. राम विरंजन, समकालीन भारतीय कला, कुरूक्षेत्रः निर्मल बुक एजेन्सी, 2003: **7**
3. पूरनचन्द टण्डन, सौन्दर्य विमर्श, दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2016, **99**
4. श्रुति कालरा, सौन्दर्य शास्त्र के मूलाधार, नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स, 2011, **80**
5. ममता चतुवेर्दी, सौन्दर्य शास्त्र, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2012, **167**
6.उमाशंकर शुक्ल, आलोचना लोचन, इलाहाबादः रामनारायणलालटोनी माधव, 1965, **1–2**
7. योगेन्द्र प्रताप सिंह, हिन्दी आलोचना इतिहास और सिद्धान्त, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2008, **18, 19, 20**